PARIVARTAN परिवर्तन
TAKSHILA तक्षशिला

हमार अंगना

अंक 13 | अर्द्धवार्षिक | पूर्व-स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा पर परिवर्तन के प्रयासों का संकलन, आँगनबाड़ी केन्द्रों के लिए | अक्टूबर 2022-मार्च 2023

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

जैसा कि आप जानते हैं-बालघर आंगन,परिवर्तन की शिक्षा इकाई की एक उप इकाई है जो पिछले 9 वर्षों से लगातार आंगनवाड़ी केंद्रों के 3-6 वर्ष के बच्चों के साथ जुड़ी है। इस प्रयास के अंतर्गत बालघर 21 गाँवों के 52 आंगनवाड़ी केन्द्रों के साथ जुड़कर काम कर रही है। बालघर आँगन का उद्देश्य बच्चों को खेल,कविता,कहानी के माध्यम से शारीरिक, मानसिक एवं भाषा का ज्ञान करवाना और कार्यक्षेत्र के आंगनवाड़ी केन्द्रों को सुदृढ़ करने हेतु सभी सेविकाओं का मार्गदर्शन करना है। आँगनवाड़ी केंद्र द्वारा संचालित की गई गतिविधियों एवं कार्यक्रमों-पोषाहार, गोदभराई, दैनिक शैक्षिक गतिविधि कार्यक्रमों में बालघर आँगन का हस्तक्षेप सीधे तौर पर हो रहा है। इस अंक के माध्यम से मैं, बालघर आँगन के हस्तक्षेप से उत्पन्न प्रभाव, नयी पहल तथा केन्द्रों के साथ सहयोग के पिछले छह माह के अनुभवों को आप सभी के साथ साझा कर रही हूँ।

पिछले दिनों अपने कोर एरिया के कुछ केन्द्रों के साथ गुनगुन कार्यशाला का आयोजन किया गया था जिसमें बच्चों सहित सेविकाओं,सहायिकाओं ने भाग लिया तथा बहुत ही सुंदर तरीके से जुड़ कर उन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाया। साथ ही साथ सहायिका प्रशिक्षण के दौरान सहायिका लोगों मे जो जज्बा देखने को मिला वह अद्भुत था। मुश्किल कामों को उन्होंने गतिविधि के माध्यम से सरल कर दिखाया।

सप्रेम

मधुबाला

हमारी कार्य प्रणाली

बालघर, आस पास के कुल 21 गाँवों के 52 आगनवाड़ी केन्द्रों के साथ कार्यरत है। हमारा काम 3-6 वर्ष के आयु के बच्चों के अन्दर मानसिक,शारीरिक तथा बौद्धिक विकास को प्रबल करना है। मानव जीवन में यह उम्र ऐसी उम्र होती है,जिसे गीली मिट्टी कहा जाता है। यह एक ऐसी आयु सीमा है, जिसमें बच्चों का सवार्धिक बौद्धिक विकास होता है। हम भी इसी बात का ध्यान रखते हुए ,बच्चों को विकास के लिए खेल-खेल के माध्यम से उन्हें भविष्य में सफल नागरिक बनाने हेतु तैयार करते है ताकि ये बच्चे यहाँ से जाकर अपने केंद्र पर आदर्श बनकर उभरें और अन्य बच्चों को प्रेरित कर सकें। क्लास के लिए हमारे पास 6 माह की एक कार्ययोजना है। इस कार्ययोजना को बनाने के लिए हम प्रथम संस्था ,इकतारा संस्था , प्रार्थना एवं अश्वथ किताबें तथा दिल्ली पब्लिक स्कूल पटना की शिक्षिकाओं एवं परिवर्तन के साथियों का धन्यवाद करना चाहते हैं जिनके सहयोग के बिना यह कार्ययोजना सफल नहीं हो पाती।

हमारे पाठ्यक्रमों में मुख्य रूप से तरह-तरह की आवाजों से अक्षर (फोनीटिक साउंड) की पहचान,अपने परिवार की जानकारी, देशभक्ति कविता, मन पंसद के खाने, तरह-तरह के पोषक तत्व आदि की जानकारी को शामिल किया गया है जिससे बच्चे इन आवश्यक बातों को खेल के माध्यम से समझ लें।

आँगनवाड़ी केन्द्रों पर हमार अँगना पत्रिका का विमोचन

दिनांक–19/01/2023 को जीरादेई, निशा के सेंटर पर अन्नप्राशन दिवस मनाया गया। अन्नप्राशन दिवस मनाने के लिए आँगनवाड़ी सेंटर को बहुत ही सुंदर तरीके से सजाया गया था। कार्यक्रम शुरू होने से पहले हार्मोनियम और ढोलक का सेविका द्वारा पूजन किया गया और कार्यक्रम के शुरू होते ही वहां महिलाओं की भीड़ लग गयी। जिसके तहत दो बच्चों को एक साथ अन्नप्राशन कराया गया तथा मधुबाला द्वारा बच्चों को तरल खाद्य पदार्थ के बाद ठोस पदार्थ को उम्र के हिसाब से कितने मात्रा मे खिलाना है यह जानकारी दी गई। इसके साथ ही "हमार अंगना" पत्रिका का विमोचन किया गया और पत्रिका के सृजन की प्रक्रिया के बारे में आलोक सिंह द्वारा विस्तार से समझाया गया।

नई नई गतिविधि से अवगत कराया गया गुनगुन कार्यशाला में

कार्यशाला विवरण

दिनांक 24 दिसंबर 2022 को मियाँ भटकन पंचायत के गोठी गाँव के 3 आँगनवाड़ी केंद्रों की सेविकाओं और बच्चों के साथ यह कार्यशाला आयोजित की गई। जिसमें 3 आंगनवाड़ी केंद्रों से 3 सेविकाओं, 3 सहायिकाओं और 62 बच्चों ने भाग लिया।

उद्देश्य : इस कार्यशाला का उदेश्य- सेविका / सहायिका को नई-नई गितिविधि दिखाना, समझाना और अपने-अपने केन्द्रों पर बच्चों के साथ बेहतर ढंग से कराने के लिए प्रेरित करना है।

आंगनवाड़ी सेंटर पहुचने के बाद वहाँ पर कार्यक्रम को शुरू किया गया।

प्रार्थना-तुम्ही हो माता-पिता तुम्ही हो-प्रार्थना को सेविका और सहायिका के बीच करवाया गया। बच्चों, सेविकाओं और सहायिकाओं ने बहुत ही सुंदर तरीके के साथ प्रार्थना का स्वसर वाचन किया।

बालगीत-प्यासा कौआ बालगीत का स्वस्ववाचन किया गया। बालगीत के प्रस्तुती होने के बाद सारी सेविकाओं ने अपनी-अपनी तरीके से अलग-अलग बालगीत का स्वस्व वाचन की सेविका भी एक नई उर्जा के साथ अपनी बालगीत का प्रस्तुत की।

कहानी–चाँद की सैर कहानी के दौरान बच्चे शांतिपूर्वक बैठकर कहानी सुन रहे थे। बच्चों की तरफ से आवाज नहीं आ रही थी। लग ही नहीं रहा था कि वहाँ पर कोई बच्चा मौजूद है। बच्चे इतनी तन्मयता से कहानी सुन रहे थे। और तो और कहानी वाचन के समय बच्चों की तरफ से सवालऔर जबाब भी हो रहे थे।

रंगों की दुनिया-बच्चों, सेविकाओं और सहायिकाओं को अलग- अलग ग्रुप में बाँटकर बच्चों से ही हाथ के पंजे का आकार तो वहीं दूसरे ग्रुप में कोलाज गतिविधि को कराया गया। इस गतिविधि में सेविका से ज्यादा तेजी से बच्चे ही गतिविधि को कर रहे थे।

सेविका की प्रतिक्रिया

सेविका दीपमाला जी कहना यह था कि जब हमलोग एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं तो एक दूसरे को देख कर बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

सेविका	सहायिका	बच्चे	अभिभावक
3	3	62	8

परिवर्तन में सेविकाओं के लिए आयोजित किया गया सेविका प्रशिक्षण

दिनांक-27-28 फरवरी 2023, स्थान- सभागार (परिवर्तन), समय- 10:30 AM से- 2:50 PM

उद्देश्य:

इस कार्यशाला का उद्देश्य सेविकाओं एवं सहायिकाओं को नई- नई गतिविधियों, पाठ्य सामग्री का निर्माण तथा नई तकनीक से अवगत करवाना होता है। इन गतिविधियों को सीखकर वे अपने केंद्र के बच्चों को और बेहतर ढंग से इसका लाभ दे पायेंगीतथा आंगनवाड़ी केंद्र को और सुदृड बना सकेंगी।

कार्यक्रम विवरण

परिवर्तन परिसर में दिनांक 27 और 28 फरवरी 2023 को सेविका प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमे पटना पब्लिक स्कूल से आये विशेषज्ञ द्वारा आंगनवाड़ी को कैसे सुदृढ़ बनाया जाय कि ज्यादा से ज्यादा बच्चे और समुदाय आंगनवाड़ी केंद्र से जुड़ सकें-इसका प्रशिक्षण दिया गया।

कुल प्रखंड : 2, कुल पंचायत : 10, सेविका : 102

प्रशिक्षकों का नाम-सीमा चौधरी, वंदना सिन्हा, कुमारी अर्चना, आईस आलम

सेविका प्रशिक्षण का पहला दिन सभी सेविकाओं के साथ परिचय से हुआ। फिर- "तू राम है तू रहीम है तू करीम कृष्ण खुदा हुया" प्रार्थना का स्वरवाचन करवाया गया। प्रार्थना-, हम क्यों करते है। हमारी दिन की शुरुआत अच्छा हो तथा हम सच्चाई की राह पर कैसे चलें पर आधारित गतिविधियों को सेविकाओ के बीच किया गया। उसके बाद नई नई कविताओं का स्वर वाचन किया गया- 1. मोटू भैया बड़े गवईया, २. मछली चम-चम चमक रही थी, 3-आहा टमाटर बड़े मजेदार। फिर "भीमा गदहा" कहानी बहुत ही मजेदार तरीके से रोल प्ले के माध्यम से सुनाई गई। उसके बाद उस कहानी के जरिए बहुत सारे प्रश्न उभर आए जैसे- भीमा गधा को कौन जगाया होगा?

बच्चों को जानवरों की कहानी अच्छो और रोमांचक लगती है। यह बात भी पुष्ट हुई। उसके बाद सेविकाओं द्वारा बच्चों को एक एक पेपर दिया गया जिसपर बच्चों ने अपनी मनपसंद कविता, कहानी लिखे और उसको बारी-बारी से प्रस्तुत भी किया योग विचार-आवाज को सुनना तथा महसूस करना दोनों हाथ को मलते हुए तलवे की गर्माहट आँख को देना फिर बातचीत करना-यह सब बतलाया गया। शिक्षण सामग्री का निर्माण और कौवा और राजा का पपेट बनवाया गया।

दूसरा दिन

कार्यशाला के दूसरे दिन प्रार्थना से शुरुआत की गई और उसके के बाद सभी सेविकाओं के साथ गतिविधिओं का पूर्वाभ्यास करवाया गया। उसके बाद बंदना द्वारा नटखट चूहे की कहानी सुनाई गई, यह कहानी छोटे बच्चों के लिए बहुत ही रोचक था क्योंकि चूहे के नाम से बच्चे बेताब हो जाते हैं और उसके बारे में जानने को उत्सुक हो जाते है। कविता- "एक बुधिया ने बोया दाना" गाजर के बीज के सफ़र के बारे में थी जिसमे एक बुढ़िया

द्वारा बोया गया बीज- पानी,खाद और अन्य चीजों की मदद से एक पौधे में अंकुरित हो जाता है।

गणित की गतिविधि-(तमबोला) 1 से 15 तक नम्बर लिखना किसी भी पेज के बने हुए खानों में :-

इंद्र धनुष में कितने रंग?-7
दो हाथों में कितनी उँगलियाँ?-10
एक दर्जन में कितन केले?- 12
कितनी धरती कितने सूरज?-1
एक गाये के कितने पैर?-4
राष्ट्रीय ध्वज में कितने रंग?-3
एक डाल पे 10 चिड़िया, 4 उड़ गयी तो कितनी बची?-6
एक क्यारी में 5 फूल तो 3 क्यारी में कितने?-15
हमारी आँखें कितनी?-2

इत्यादि, मुझे इस तरह की गतिविधि से 15 अंको और शब्दों की जानकारी हुई।

वैज्ञानिक प्रयोग-किसी चीज़ का पानी में तैरने और डूबने का कारण-हवा का दबाव

किचन गतिविधि-बिन आग हम क्या क्या कर सकते हैं?-चना और मूंग को अंकुरित कर हम बच्चो को संतुलित आहार दे सकते हैं।

कहानी-"कौवा और राजा की कहानी" बहुत ही सुन्दर तरीके से बच्चो को सुनाई गई।

कहानी वाचन के दौरान सारी सेविकाएँ बहुत ध्यानपूर्वक कहानी को सुन रही थी, और कहानी खत्म होने के बाद उन्होंने बहुत तरह की बातें की-इस कहानी से हमे यह सीख मिलती है कि हमें सोच समझ के काम करना चाहिए ना कि किसी के बहकावे में आके, राजा की तरह।

उपस्थित सेविकायें

दिन	पंचायत	सेविकाओं कि संख्या
27 फ़रवरी 2023	10	102
28 फरवरी 2023	10	102

शीतलहर से प्रभावित आँगनवाड़ी केंद्र

बहुत ज्यादा सर्दी एवं शीतलहर से आंगनवाड़ी केंद्र प्रभावित रहा जिसके कारण केंद्र सरकार के आदेसानुसार दिनांक 2 जनवरी से लेकर 19 जानवरी तक केंद्र बंद रहा। केवल सेविका सहायिका की उपस्थिति अनिवार्य थी। उसी दौरान परिवर्तन बालघर के माध्यम से प्रत्येक आंगनवाड़ी केंद्र पर कार्ययोजना के अनुसार नई-नई कवितायें और कहानियाँ सेविकाओं एवं सहायिकाओं को सिखाये गए। कार्डबोर्ड पर सबकुछ लिखकर प्रत्येक केंद्र पर दिया गया ताकि सेविका अपने-अपने केंद्र पर उसे दीवालों पर साट लें। अब, जब आंगनवाड़ी केंद्र खुलेगा तब सेविकाएं अपने– अपने केंद्रों के बच्चो को सिखा लेंगी।

प्रतिक्रिया

दीपशिखा देवी -हमलोगों को सेविका प्रशिक्षण का बहुत दिनों से इंतजार रहता है क्योंकि यहाँ आने के बाद हमको नई-नई गतिविधि सीखने को मिलता है फिर वही गतिविधि हम अपने बच्चों को सिखाते हैं । इस प्रशिक्षण में हमलोग बहुत सी गतिविधि सीखे।

मीना देवी -प्रशिक्षण में तो बहुत बार आई हूँ पर इस बार के प्रशिक्षण में हमलोग जो सीखे हैं शायद ऐसा सीखना बहुत आसान भी है क्योंकि हमलोग के समझ के लिए छोटा-छोटा कविता ,कहानी सिखाया गया जिसको हम अच्छे से सीख कर अपने बच्चो को भी अच्छे से सिखा सकते हैं। हर बार कि अपेक्षा इस बार मुझे और भी बहुत कुछ सीखने को मिला।

गुड़िया देवी (सेविका)- हमलोग बच्चों के साथ काम करते है, पर जब भी इस प्रशिक्षण में आते हैं तो सभी परेशानी भूल कुछ समय के लिए खुद बच्चा बन जाते है और खूब मस्ती करते है। पर ये सभी मस्ती हमारे कामों से जुड़ी है एवं बच्चों के लिए लाभदायक होती है। खेल खेल के माध्यम से हम बच्चों को बहुत कुछ सिखा सकतें है यह जानकारी मिली।

जीरादेई ब्लॉक के सुपरवाइजर का कहना था कि मैंने बहुत से प्रशिक्षण देखे हैं पर ऐसा प्रशिक्षण आज से पहले कहीं नही देखा। इस प्रशिक्षण कों बहुत नियम तथा बहुत खुशनुमा माहौल से दिया जा रहा हैं।

सेविका की केस स्टोरी

नाम-दीपशिखा देवी, केंद्र-बलिया, कोड-71

परिवर्तन द्वारा आयोजित सेविका प्रशिक्षण में दीपशिखा देवी ने भाग लिया। यह बलिया पंचायत के बलिया गाँव की ही निवासी हैं। दीपशिखा अपने कार्य के समय के प्रति सुदृढ़ रहती हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञ द्वारा किसी भी गतिविधि के समाप्त होने के पश्चात वे प्रश्नों की बौछार कर देती थीं। उनके द्वारा प्रश्न किया जाना इस बात का संकेत था कि वे इन गतिविधियों में रूचि ले रही हैं। सेविका प्रशिक्षण में 100 से ज्यादा सेविकाओं के उपस्थित होने के बावजूद, ज्यादातर प्रश्नों का उत्तर दीपशीखा द्वारा ही प्राप्त होता था।

नाम-मीना देवी, केंद्र-मझवलिया, कोड-11090

मीना देवी सिवान जिले के मझवलिया प्रखंड के मझवालिया गाँव में रहती हैं। मीना अपने सेण्टर पर बच्चों के साथ नई-नई गतिविधी सिखाती हैं। एक दिन जब में विजिट के लिए मीना के सेंटर गई तो वहां मैने बच्चों के साथ प्रर्थना करवाई। उसके बाद मीना हमसे कहने लगी-"मधुबाला जी ये वाला प्रर्थना आप मेरे मोबाइल में डाउनलोड कर दीजिए। मैंने उनके फोन में प्रार्थना डाउनलोड कर दी। और परिवर्तन वापस चली आई। उसके बाद मीना हमेशा फोन के जरिए कविता-कहानी मांगते रही थी। मीना से लगातार बात होने लगी तब उन्होंने बताया-"सब परिवर्तन का प्रयास है बस मैंने थोड़ा सा इन बच्चों के साथ मेहनत किया है और उनका उत्साह बढ़ाया है। अब बच्चे खूब कविता-कहानी का पाठ करते हैं।"

नाम–संगीता देवी, केंद्र–बंगरा (हरिजन टोला),कोड-8067

संगीता देवी एक बहुत ही नेक और अपने काम के प्रति जिम्मेदार सेविका हैं जो बंगरा गाँव की रहने वाली हैं। मैं जब भी उनके सेंटर पर किसी भी वक्त गयी हूँ मैंने उन्हें उनके पूरे ड्रेस में देखा है। वे अपने सेंटर को प्रतिदिन सुचारू रूप से समय से खोलती और बच्चों को पढ़ाती है। और मैंने यह भी नोटिस किया है कि सेविका और सहायिका कभी भी अपनी कक्षा से अनुपस्थित नहीं होती है। संगीता में एक और खूबी यह भी है कि वे हर छोटी चीज से कुछ न कुछ सीख लेना चाहती हैं और वे जो भी सीख लेती हैं उसे बेहतर तरीके से दूसरे के सामने व्यक्त करना चाहती हैं।

सहायिका की केस स्टोरी

नाम- जानकी देवी, उम्र- 55, कोड-80 68

बंगरा की निवासी जानकी देवी इस बार सहायिका प्रशिक्षण में आई थी। "डोंट जज अ बुक बाई इट्स कवर"इस कथन का साक्षात रूप हमे जानकी देवी द्वारा एक झलक देखने के बाद मिला। जिस चीज़ की उनसे उम्मीद नही थी उन्होंने वह कर दिखाया। उन्होंने आते आते ही स्टेज पर कविताओं की बरसात कर दी और यह साबित कर दिया कि किसी की काबिलयत की पहचान उसकी उम्र, शक्ल, और कद से नही की जा सकती होती है।

बच्चों की केस स्टोरी

नाम-सुफिया खातून, उम्र-5 साल

सुफिया बालघर की नियमित छात्रा है। एक दिन सुफिया अपनी छोटी बहन "जानवी" को लेकर आई और गाड़ी से उतरते ही वो पूरे कैंपस के कोने कोने को अपनी बहन से रूबरू कराने लगी। बालघर के सामने खड़े होकर बतातीं-"ये मेरा क्लास है जिसमे मैं

बहुत सारी चीजें सीखती हूँ। " मुझे यह सब बातें सुनकर आश्चर्य होता क्योंकि सुफिया की उम्र उसकी बातों से मेल नही खाती। वह समझदार नही पर अपनी बहन के सामने वह खुद को बड़ो के जैसा दिखाती है। उसकी प्यारी हरकतें देख के मुझे ये लगता है कि 'बच्चे भगवान का रूप होते है।'

नाम-दीपू कुमार, उम्र- 5 वर्ष, ग्राम-नारायणपुर

दीपू कुमार क्लास का मस्त मौला बच्चा है, उसका बात अलबेला है। दीपू क्लास के दौरान कभी चैन से नहीं बैठता था, कभी इधर बैठता था कभी उधर बैठता था। कभी खिड़की के पास खड़ा होता था तो कभी बाहर देखता रहता। दीपू ने इस 26 जनवरी के कार्यक्रम में भाग लिया था और एक कविता की प्रस्तुती की थी जिसका शीर्षक था "हमसब के प्यारे बापू", उस दिन मुझे बहुत ख़ुशी मिली थी क्योंकि दीपू बहुत शरारती बच्चा था। जब भी मैं बच्चों को लाने नारायण पुर जाती,दीपू मेरी गाड़ी की आवाज सुन इधर उधर छिपने लगता। एक घटना जो मैं साझा करना चाहती हूँ:-

एक दिन दीपू मेरी गाड़ी की आवाज सुन किसी के घर में छिप गया, उस दिन तो मैंने उसका हाथ पकड़ उसे बालघर आँगन में पहुंचाया था पर अगले दिन दीपू किसी के घर में न जा, सरसों के खेत में छिपा। उस दिन उसके दादा एवं दादी ने उसे ढूंढा पर वो नही मिला,फिर मैंने कुछ बच्चों की मदद उसे ढूंढा और क्लास के लिए चल दिया। रस्ते में आते समय मैंने उससे पूछा की-" तुम क्यों सरसों में छिपे थे तो उसने कहा की ऐसा करने को मेरी मम्मी ने कहा था। "

समय के साथ-साथ दीपू के अन्दर बहुत से बदलाव आये जो उसके हित में थे।